डेरे वाले बाबा जी और सन्तान सुख की लालसा-3

“बच्चे के लिये आशीर्वाद बाबा जी मुझे अपने लंड से मेरी कोमल फ़ुद्दी चोद कर दे रहे थे। इस भाग में पढ़ें कि बाबा ने मुझे पूरी नंगी करके मेरे जिस्म को चाट, चूसा। …”

Story By: Heart Snatcher (hsnatcher)
Posted: Sunday, September 11th, 2016
Categories: इंडियन बीवी की चुदाई
Online version: डेरे वाले बाबा जी और सन्तान सुख की लालसा-3

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

डेरे वाले बाबा जी और सन्तान सुख की लालसा-3

अब तक आपने पढ़ा..

बाबाजी मेरी इज्जत से खिलवाड़ करने पर उतारू हो गए थे और मुझे भी अच्छा लगने लगा था।

अब आगे..
‘वाह.. बहुत सुंदर नाम है.. जग्गो.. अब देखती जा जग्गो.. यह बाबा कैसे तेरी शर्म उतारता है..’
यह कहते हुए बाबा जी ने एक हाथ से मेरे सर को एक तरफ किया और गले को जीभ से ज़ोर-ज़ोर से चाटने लगे।

अब उन्होंने पूरा भार मेरे ऊपर डालना शुरू कर दिया, मैं उनके वजन के नीचे दबी सिसकारियां भरने के सिवा कुछ नहीं कर सकती थी.. मैंने भी दोनों बाजुओं से उन्हें अपने आलिंगन में ले लिया।
उनकी दाढ़ी मूछों के घने बाल मेरे मुँह और गले पर गुदगुदी कर रहे थे।

‘उह बाबा जी मेरी कमर दु:ख रही है.. ठीक से बिस्तर पर नहीं हो पा रही हूँ..’
अभी भी मैं आधी नीचे लटक रही थी जिससे बाबा जी के भार से दिक्कत होने लगी थी।

बाबा जी ने अनसुना कर दिया..

मैंने फिर प्यार से उनके गले एवं पीठ को सहलाते हुए मादक आवाज़ में कहा- बाबा जी

आपके ही तो पास हूँ, कृपया बिस्तर के ऊपर सरक जाने दीजिये.. मुझे कमर पर बहुत दु:ख रहा है।

बाबा जी ने सर उठाया.. हम दोनों की प्यार की जंग में उनकी पगड़ी भी थोड़ी ढीली हो गई थी।
बाबा जी मुझ पर से उठे और मैं भी उठकर बिस्तर पर सीधी होने लगी।

बीच में रोकते हुए उन्होंने कहा- अपनी कमीज़ भी निकाल दे जग्गो।

मैंने खड़ी होकर पहले अपनी चुनरी हटाई जो अब तक खिसक कर बाजू तक ही रह गई थी और धीरे से कमीज़ उतारने लगी। अब मैं उनके सामने सिर्फ ब्रा पहने ही खड़ी थी।

मैं ब्रा भी निकलने लगी.. तो उन्होंने रुकने का इशारा किया।
वो मुझे आलिंगन में लेने के लिए मेरे पास आ रहे थे और मैंने भी अपनी दोनों बाजुओं को उठाकर उनका स्वागत किया।

बाबा जी ने मुझे अपनी बाजुओं में जकड़ा। मैं मुश्किल से उनके सीने तक भी नहीं पहुँच पा रही थी। उन्होंने मेरे पीछे हाथ डालकर एक पल में मेरी ब्रा की हुक खोली और ब्रा जाकर नीचे गिर गई।

मेरे बड़े-बड़े मुम्मे अब आज़ाद थे और उनके सीने से जा लगे।

बाबा जी ने पीछे हटके देखा तो देखते ही रह गए।
‘क्या बला की खूबसूरत हो तुम जग्गो.. कहाँ छुपा कर रखा था अब तक तुम्हारे पति ने तुम्हें..’
यह कहते हुए उन्होंने मुझे नग्न अवस्था में ही अपनी बलशाली बाजुओं में उठाया और नर्म-नर्म बिस्तर पर जा कर लिटा दिया।

मुझे घूरते हुए वह अपनी मूछों को दोनों हाथों से ताव दे रहे थे। उनका बड़ा सा लौड़ा अब पूरे जोबन पर था.. इतना बड़ा लवड़ा.. जिसे देखकर मुझे डर भी लग रहा था और मन में लालसा भी भर रही थी।
उसके ठीक नीचे उनकी गोलियां लटक रही थीं और गोलियों की थैली पहले से ज्यादा फूली हुई लग रही थी।

बाबा जी ने बिस्तर के साथ मेज़ पर रखे फ़ोन से अपनी दासी को फ़ोन किया।
'बाहर इसकी सास से कहो कि अन्दर पूजा शुरू कर दी है.. और अभी समय लग जाएगा.. यह भी कहना कि पूजा के बाद अपने आप घर छोड़ देंगे। यहाँ इंतज़ार करने की जरूरत नहीं है।'
इतना कह कर उन्होंने फ़ोन काट दिया।

बाबा जी मेरे ऊपर चढ़ गए और मेरे गालों को चूमने लगे। अपने दोनों हाथों से उन्होंने मेरे हाथ खोल कर बिस्तर पर जकड़ लिए। धीरे-धीरे गालों को काटते हुए होंठों पर चुम्बनों की बारिश करने लगे और जीभ से चाटते-चाटते गले तक आ गए।

मैं मस्ती के मारे अपना सर इधर से उधर पटक कर 'हाय बाबा जी.. उहह बाबा जी.. इस्स.. बाबा जी..' की मादक आवाजें करने लगी।

ऐसे कभी किसी ने मुझे नहीं चूमा-चाटा था.. यह किस तरह की रति थी.. मैं समझ नहीं पा रही थी।

बाबा जी ने मेरे हाथ छोड़ दिए और अपने दोनों हाथों से मेरा दायाँ दूध अपने हाथों में भर लिया- क्या पके हुए आमों जैसे स्तन हैं जग्गो तुम्हारे.. इतना सफ़ेद तो दूध भी नहीं होता जितना सफेद तुम्हारा जिस्म है..

उन्होंने मेरी चूची को मुँह में भर लिया और बड़ा सा मुँह खोलकर ज्यादा से ज्यादा मुम्मा मुँह में भरने लगे।
इतना गर्म मुँह था उनका.. जिससे मुझे और भी ज्यादा आनन्द मिल रहा था।

उनकी साँसें तेज चल रही थीं.. जिससे ‘ह्म्म्म.. ह्म्म्मम्म..’ की आवाज़ आ रही थी। बाबा जी कभी एक दूध पर तेजी से मुँह मारते और कभी दूसरे को मुँह में भर लेते।

मैंने आखें बंद की और उनकी पगड़ी से पकड़कर उनके सर से अपनी चूची पर दबाव बना दिया।
बाबा जी धीरे-धीरे मेरी छातियों के बीच मुँह मारने लगे, फिर पेट को चूमते हुए मेरी चूत की तरफ बढ़े।

‘अच्छा करती हो.. जो जिस्म से बाल साफ़ नहीं करती.. कितने मुलायम छोटे-छोटे रोम हैं तुम्हारे..’
यह कहते हुए बाबा जी पेट और फुद्दी के बीच की जगह को नोंचने लगे।
ज़ोर से जीभ चलाते हुए कई बार उन्होंने मेरी इस जगह को काट लिया.. जिससे निशान बनने लगे।

‘उफ़ बाबा जी.. आहहह.. ज़रा प्यार से करो ना.. आपकी बेटी के जैसी हूँ..’
यह कहते हुए मैंने उनकी गालों को प्यार से सहलाया।

मुझे डर था कि मेरे तेज विरोध से उन्हें बुरा न लग जाए.. आखिरकार वो हमारे बाबा जी हैं।

फिर उन्होंने मेरी चूत की झांटों को कोमलता से दरार के ऊपर हटाना शुरू किया, प्रेम से थोड़े-थोड़े बाल वह दोनों तरफ संवारने लगे।

‘माँ कसम योनि तो तुम्हारी एकदम निर्मल है.. तुम्हारी योनि तो अभी तक बहुत तंग है। एकदम लाल-लाल गुलाब जैसी पंखुड़ियां हैं.. कोई मूर्ख ही होगा जो इसमें लिंग ना डालना चाहता हो। क्या तुम्हारे पति ठीक से सम्बन्ध नहीं बना पाते ?’
बाबा ने दिलचस्पी जताते हुए पूछा।

‘ऐसी बात नहीं है.. मेरे पति के मुझसे सम्बन्ध ठीक हैं.. लेकिन व्यस्त रहने के कारण वो हफ्ते में एक-दो बार ही शारीरिक सम्बन्ध बना पाते हैं। कुछ तो उनका लिंग आपके जितना विशालकाय नहीं है.. शायद इसलिए आपको थोड़ी तंग लग रही है’ मैंने सफाई देते हुए कहा।

बाबा जी ने खींसें निपोरते हुए अपनी जीभ को मेरी चूत में उतारना शुरू किया।

‘ऊई माँ.. मार डाला बाबा जी.. बहुत गुदगुदी हो रही है.. आहहह…. एक बार में खा जाओगे क्या बाबा जी.. उफ़ कितनी लिपलिपी है आपकी जीभ.. सीईई… बाहर निकालो ना बाबा जी..’
यह कहते हुए मैंने उनके सिर को अपनी जाँघों में जकड़ लिया।

बाबा जी आनन्द से आँखें बंद करते हुए बोले- क्या अमृत जैसा अनुभव है तुम्हारे रस का.. तुम तो बहुत बुरी तरह से ‘चू’ रही हो। बहुत ही मादक स्त्री हो तुम तो बेटी.. मैं एक तरीका बताता हूँ कि औरत का रसपान कैसे किया जाता है। अपनी टाँगें चौड़ी करके ऊपर उठकर टाँगें हाथों से पकड़ो.. बाकी काम मेरा है।’

बाबा जी ने मेरी टांगों पर से वजन हटाया और मैंने बिना देरी किए टाँगें उसी पोज़ में ऊपर उठा लीं और पकड़ लीं.. जिससे मेरी चूत और चूतड़ खुलकर सारा कीमती सामान बाबा के सामने आ गया।

‘ओह्ह.. जन्नत हो तुम जग्गो.. बिल्कुल जन्न्त की अप्सरा जैसी योनि पाई है तुमने..’ कहकर बाबा जी ने अपनी जीभ को चम्मच जैसे मोड़ा.. एक हाथ की उंगलियों से चूत की पंखुड़ियों को अलग किया और लंबी.. मुलायम जीभ मेरी फुद्दी में उतारने लगे।

कुछ इंच अन्दर जाने के बाद मुझे महसूस हो रहा था कि मेरा चूत रस अन्दर से निकल रहा है और चम्मच के आकार की जीभ से होता हुआ उनके मुँह में जा रहा है।
आह्ह.. क्या आनन्द आ रहा था.. कल्पना से भी परे!
बीच में बाबा जी के रस गटकने की आवाज भी आती। वह इस कला के बहुत माहिर निकले।

‘अहह बाबा जी.. मैं आने वाली हूँ.. अपना मुँह पीछे कीजिए.. आहहह.. हए मां.. मार डाला बाबा जी ने.. पीछे हटिये ना..’ मैंने कराहते हुए कहा।

पीछे हटने की जगह उन्होंने मेरी जाँघों जो कस लिया और मुँह से चूत पर और दबाव बनाते हुए ‘पुच्च.. पुच्च..’ की आवाज़ करते हुए अन्दर जीभ चलाने लगे। वह ऐसे मज़े लेकर चाट रहे थे मानो कोई बच्चा शहद चाट रहा हो।

अब मैं अपने आप पर और नियंत्रण नहीं कर पा रही थी इसलिए एकदम से मेरे अन्दर फव्वारे जैसा दबाव बनने लगा और 5-6 सेकंड में मेरी चूत का पानी ज़ोर से बाहर बहने लगा।

अब तक बाबा जी ने अपनी पोजीशन ले ली थी और अपना मुँह मेरी फुद्दी पर कस लिया था.. जिस वजह से सारा पानी उनके मुँह में जा रहा था। वह एक पेशेवर की तरह तेजी से सारा रस गटक रहे थे।

‘आईईईई.. आह्ह..’ मेरी तेज़ आवाज़ों से सारा कमरा गूंजने लगा। मैं अपनी गांड को

ज़ोर-ज़ोर से उछालने लगी.. लेकिन बाबा जी की जकड़न की वजह से मैं कम हिल पा रही थी।

'तू तो लाजवाब है जग्गो.. और बहुत स्वादिष्ट भी..'
यह कहकर बाबा ने चूत का प्यारा सा चुम्बन लिया और ऊपर आकर फिर से मम्मों से खेलने लगे।
यह कहानी आप अन्तर्वासना डॉट कॉम पर पढ़ रहे हैं !

मुझे उनके मुख से 'तू तड़ाक' सुनकर थोड़ा अजीब लगा। मेरी मस्ती उतरने के साथ ही अब मुझे फिर से शर्म आने लगी थी.. लेकिन बाबा जी के द्वारा मुम्मों की चुसाई मुझे दु:ख देने लगी।

उन्होंने मुझे चूचियों के दाने पर ज़ोर से काटा.. तो मेरी तकलीफ से 'आह..' निकल गई और मैं गिड़गिड़ाने लगी- आई.. बस भी करो बाबा जी.. मेरी योनि को स्पर्श करके मुझे आशीर्वाद दीजिए और जाने दीजिए.. बहुत देर हो रही है।

बाबा जी ने मेरी बात को अनसुना किया और मेरे होंठों को कसके चूसने लगे।
अब मुझे उनका बर्ताव बहुत ही हैवानों जैसा लगने लगा था।

मैंने उनके मुँह से अपना मुँह निकाला और एक तरफ कर लिया। इस तरफ बहुत बड़ा शीशा लगा था जिसमें मैंने अपना और बाबा जी का प्रतिबिम्ब देखा। बाबा जी का विशाल काला जिस्म मेरे गोरे अंगों को रौंद रहा था और वह मेरे मुम्मों को मुँह में डाल कर खेल रहे थे। उनके दिमाग पर हवस सवार थी।

उन्होंने कहा- अभी कहां जाओगी जग्गो.. अभी तो खेल शुरू हुआ है। अभी तो बहुत आनन्द बाकी है। अपनी टाँगें खोल कर पूरी चौड़ी कर ले और देख चरणदास को अपनी

जवानी से खेलते हुए। तेरी असली इज्जत तो अब उतरेगी.. ऐसी चूत चुदाई होगी कि याद रखेगी.. हुंह..।

वह इतने जोश में थे कि ठीक से बोल भी नहीं पा रहे थे और ऐसे बात कर रहे थे.. जैसे मैं उनकी रंडी हूँ।

मैं बाबा जी के आदेश की अवेहलना नहीं कर सकती थी और वह भी जब वह इतने उत्तेजित हो गए हों, मैंने चुपचाप से अपनी टाँगें उनके नीचे खोल दीं।

बाबा जी ने मेरी चूत से द्वार पर अपना मूसल रखा और फुद्दी की दरार पर रगड़ने लगे। उनका लण्ड अब लार टपका रहा था.. जिससे मिलकर मेरी फुद्दी से भी पानी रिसने लगा। मैं उनको शांत करने के लिए उनके चेहरे एवं गले पर धीरे-धीरे हाथ से सहलाने लगी।

'मेरी बिल्ली बिल्ली.. मेरी प्यारी बिल्ली.. बाबा जी के नाग को अन्दर जगह दोगी ना.. मुआहह.. लेले लेले.. मेरी शोनी शोनी बिल्ली.. प्यार करो बाबा जी के नाग को..'
मुझे उनके मुख से यह सुनकर बहुत अजीब से मचलन होने लगी थी।

दरअसल वह मेरी चूत से ऐसे बात कर रहे थे जैसे छोटी बच्ची से की जाती है।

मैं बाबा जी की नीचे नग्न अवस्था में लेटी हुई फिर आनन्द से भरने लगी। जब लन्ड आगे से गीला हो गया.. तब धीरे से बाबा जी ने छोटे संतरे के आकर का लण्ड का टोपा फुद्दी के छेद पर रखा और धीरे से दबाव बनाने लगे।
उसके सामने मेरी चूत का मुँह बहुत छोटा पड़ रहा था और उनके लिंग को जगह देने के लिए चूत का मुँह खुलने लगा।

मुझे उनके प्यार के पहले मीठे दर्द का अनुभव हुआ.. मगर यह दर्द उनके दबाव से और बढ़ रहा था। उन्होंने मेरे मुँह को अपने मुँह से बंद किया और मेरी चूत पर हल्का सा पहला

धक्का मार दिया..

मेरी तो जैसे जान ही निकाल दी बाबा जी ने !
मैं चिल्लाना चाहती थी मगर मुँह बंद होने के कारण कुछ ना बोल पाई।
बाबा जी के लन्ड का टोपा मेरी फुद्दी को चौड़ा करता हुआ अन्दर समा गया था।

उन्होंने कुछ देर मुझे ऐसे ही रखा और फिर मेरी चूत से लण्ड हटाकर दिखाया। मैंने नीचे देखा तो उसके ऊपर खून लगा हुआ था। उनके लौड़े ने मेरी चुदी हुई चूत का भी खून निकाल दिया था।

वह यह देखकर खुश होकर कहने लगे- मेरी जान, तू तो एकदम कुंवारी गुड़िया की तरह सुख दे रही है.. कुछ किया भी है तेरे हरामी पति ने ?

फिर उन्होंने दोबारा लौड़ा मेरी फुद्दी पर रखा और अन्दर उतारने लगे। पीछे हटके झटका लगाते तो असहनीय दर्द होता।
अभी तक तो सिर्फ थोड़ा सा ही मेरे अन्दर गया था.. मेरे आंसू आने लगे- नहीं बाबा जी पूरा मत डालिएगा.. मैं मर जाऊँगी !
मैंने सिसकते हुए कहा।

इस समय वह मुझ पर पूरी तरह से हावी थे।

अब जगजीत ने बताया कि बाबाजी उसको चोदने में लग गए थे.. और वो भी सन्तान सुख के लिए बाबा जी का लण्ड लीलने की सोचने लगी थी पर उनका बहुत बड़ा था इसलिए कुछ डर रही थी।

hsnatcher@ymail.com
कहानी जारी है।

Other stories you may be interested in

मेरी सुहागरात कैसे मनी

मेरा नाम सरला है और मेरी उम्र 38 साल की है. मूल रूप से मैं राजस्थान के बीकानेर में एक छोटे से गाँव की रहने वाली हूँ. मेरे परिवार में मेरे माता-पिता के अलावा मेरा एक छोटा भाई भी है. […]
Full Story >>>

पड़ोसन भाभी के हुस्न का भोग

नमस्कार दोस्तो, कैसे हो आप ? मेरा नाम देव कुमार है। मैं अन्तर्वासना की कहानियों का नियमित पाठक हूँ। मैं अन्तर्वासना से प्रेरित होकर अपनी आप बीती सुना रहा हूँ। मैं जयपुर का रहने वाला हूँ। मैं एक युवा रोमांटिक लड़का […]
Full Story >>>

काम पिपासु को मिली काम ज्वाला-2

मेरी कामवासना भरी कहानी के पहले भाग काम पिपासु को मिली काम ज्वाला-1 में आप ने पढ़ा कि अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद से मैं अपनी कामुकता को हस्तमैथुन से दबा रहा था, मुझे कोई चूत नहीं मिल रही […]
Full Story >>>

बिंदास गर्लफ्रेंड के साथ बिंदास सेक्स

दोस्तो, मेरा नाम सोनू है, मैं पुणे के रहने वाला हूँ. मैं आज आपको मेरे जीवन की पहली चुदाई की कहानी बताने जा रहा हूँ. अन्तर्वासना पर यह मेरी पहली कहानी है. चूंकि मैं पहली बार लिख रहा हूँ तो […]
Full Story >>>

गर्लफ्रैंड की मस्त मज़ेदार चुदाई

दोस्तो, मैं सैम शर्मा हाजिर हूँ अपनी एक और सेक्स स्टोरी के साथ कि कैसे मैंने लड़की पटाई और फिर उसकी चुदाई भी की। आपने मेरी पिछली सेक्स स्टोरी टीचर के साथ की पहला सेक्स पढ़ी ही होगी. मैं 21 […]
Full Story >>>